नाथ नगरी में इतिहास का पुनर्जागरण

नाथ नगरी बरेली एक ऐतिहासिक आध्यात्मिक क्षण की साक्षी बनने जा रही है। देशव्यापी यात्रा के अंतर्गत, पावन सोमनाथ ज्योतिर्लिंग के 1000 वर्षों तक संरक्षित रहे अवशेष, 30 मार्च 2026 को उत्तर प्रदेश में प्रवेश करेंगे और 10 अप्रैल को बरेली में इस विराट यात्रा का समापन होगा। यह आयोजन केवल धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता और आध्यात्मिक विजय का प्रतीक माना जा रहा है।

श्वेता
वीडीएस स्टेट को-ऑर्डिनेटर यूपी, आर्ट ऑफ लिविंग

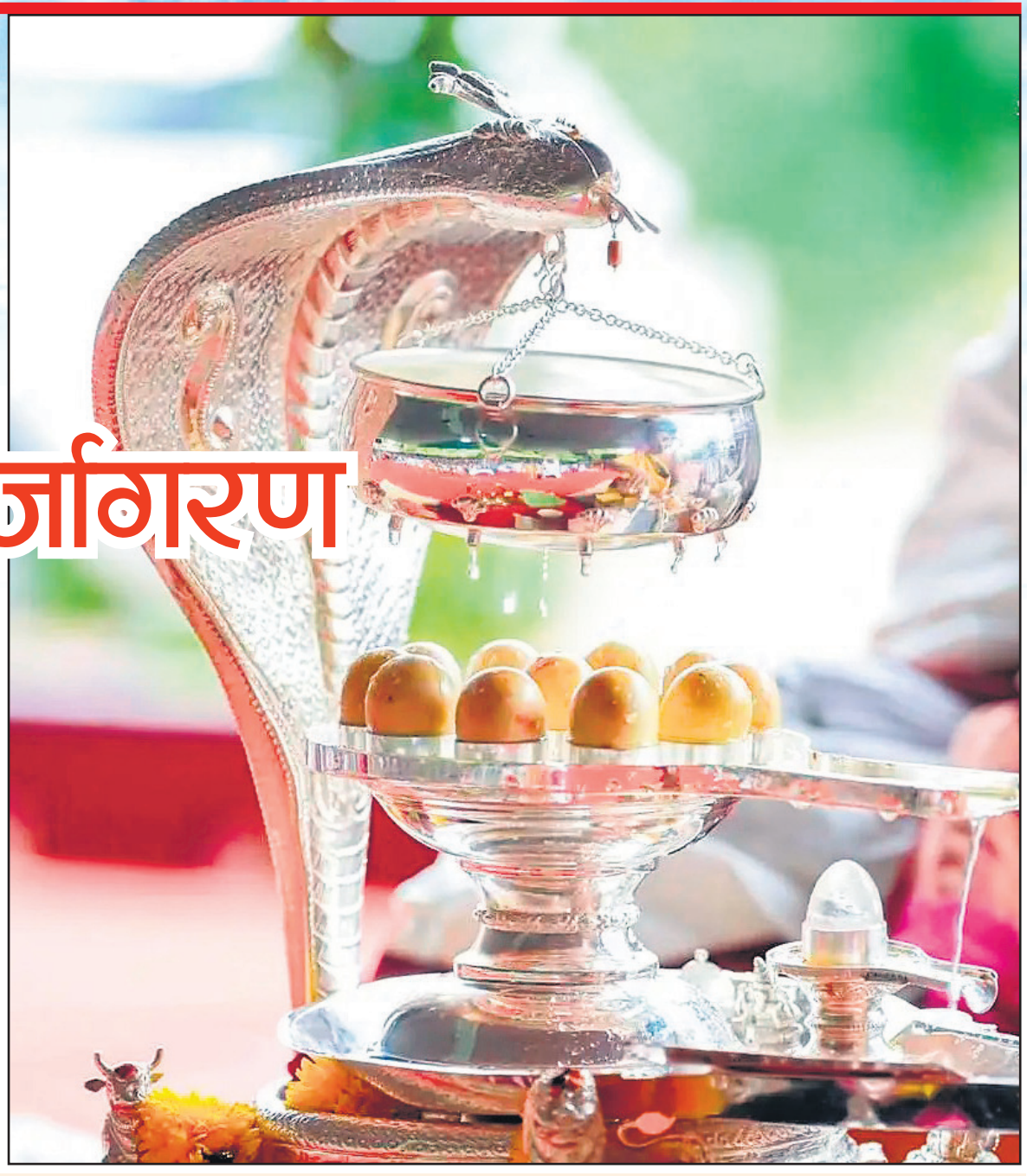

सहस्राब्दी की गाथा (1026 से 2026)

इतिहास के पन्नों में दर्ज है कि 1026 ईसवी में आक्रमणकारी महमूद गजनवी ने मूल सोमनाथ मंदिर को ध्वस्त कर दिया था। परंतु आस्था की लौ बुझी नहीं। मंदिर के कुछ पवित्र अंश अग्निहोत्री पुजारियों द्वारा गुप्त रूप से सुरक्षित रखे गए। पीढ़ी-दर-पीढ़ी इन अवशेषों की पूजा होती रही और उन्हें दुनिया की नजरों से दूर रखा गया। सन् 1924 में तत्कालीन कांची शंकराचार्य ने भविष्यवाणी की थी कि इन अवशेषों को एक शताब्दी तक सुरक्षित रखा जाए और समय आने पर एक योग्य आध्यात्मिक नेतृत्व को सौंपा जाए।

आध्यात्मिक सेतुः सोमनाथ और आर्ट ऑफ लिविंग

गुरुदेव श्री श्री रविशंकर और आर्ट ऑफ लिविंग वर्षों से भारतीय आध्यात्मिक विरासत को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित करने का कार्य कर रहे हैं। आर्ट ऑफ लिविंग का मूल दर्शन 'तनावमुक्त मन, हिंसामुक्त समाज' केवल आधुनिक जीवनशैली तक सीमित नहीं, बल्कि प्राचीन आध्यात्मिक मूल्यों की पुनर्स्थापना से भी जुड़ा है। सोमनाथ ज्योतिर्लिंग के अवशेषों को देशभर के ज्योतिर्लिंगों की यात्रा पर ले जाने का निर्णय इसी दृष्टि का विस्तार है। यह यात्रा किसी संस्था का आयोजन भर नहीं, बल्कि राष्ट्रव्यापी आध्यात्मिक एकता का अभियान बन चुकी है। गुरुदेव ने इसे 'आस्था की अखंड ज्योति' बताते हुए कहा कि यह भारत की आत्मा के पुनर्जागरण का प्रतीक है।

2025: भविष्यवाणी की पूर्णता

जनवरी 2025 में परंपरा के अंतिम संरक्षक सीतारामन शास्त्री ने ये पवित्र अवशेष बेंगलुरु स्थित आर्ट ऑफ लिविंग आश्रम में गुरुदेव श्री श्री रविशंकर को सौंपे। महाशिवरात्रि 2025 के पावन अवसर पर इनका सार्वजनिक अनावरण किया गया। श्रद्धालुओं के अनुसार इन अवशेषों में विशिष्ट चुंबकीय और आध्यात्मिक ऊर्जा अनुभव की जाती है। यह क्षण केवल हस्तांतरण नहीं, बल्कि 100 वर्षों पुरानी भविष्यवाणी की पूर्ति और 1000 वर्षों की साधना का फल था।

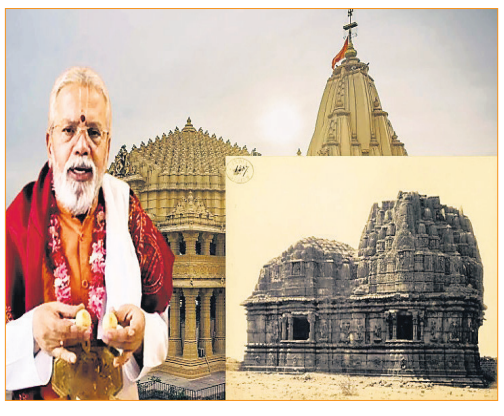

सांस्कृतिक अस्मिता की विजय

सोमनाथ की यह यात्रा केवल अतीत का स्मरण नहीं, बल्कि यह संदेश है कि भारत की आध्यात्मिक धरोहर को कोई भी शक्ति समाप्त नहीं कर सकती। 1000 वर्षों का संरक्षण, 100 वर्षों की प्रतीक्षा और आज का पुनरुत्थान यह कथा श्रद्धा, धैर्य और सांस्कृतिक चेतना की विजय है। 10 अप्रैल 2026 को बरेली में होने वाला यह आयोजन इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में दर्ज होगा। अब झुमका नहीं, सोमनाथ की ज्योति यहां दमकेगी।

बरेली क्यों बनेगा ऐतिहासिक पड़ाव?

उत्तर प्रदेश में 30 मार्च को प्रवेश के बाद यह यात्रा 10 अप्रैल 2026 को बरेली पहुंचेगी। नाथ नगरी बरेली, जो अपने सात प्राचीन शिव मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। इस ऐतिहासिक अवसर की साक्षी बनेगी। वर्षों तक बरेली झुमके के लिए पहचानी जाती थी, परंतु अब यह नगरी सोमनाथ ज्योतिर्लिंग के पावन अवशेषों के स्वागत के लिए जानी जाएगी। यह आयोजन बरेली के धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान देगा।

पौराणिक कथा

निष्काम प्रेम व अटूट निष्ठा की शक्ति

एक बार वृंदावन में ऐसा समय आया जब नंदलाल अचानक गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। उनकी बीमारी देखकर पूरे ब्रज में चिंता का वातावरण फैल गया। अनेक प्रकार की दवाएं और जड़ी-बूटियां आजमाई गईं, लेकिन किसी भी उपाय से कृष्ण की तबीयत में सुधार नहीं हो रहा था। सभी लोग असहाय होकर किसी चमत्कार की प्रतीक्षा कर रहे थे। तभी श्रीकृष्ण ने स्वयं एक अनोखा उपाय बताया। उन्होंने गोपियों से कहा कि यदि कोई ऐसा व्यक्ति, जो उनसे अत्यंत प्रेम करता हो और उनकी सच्ची चिंता करता हो, अपने पैरों को धोकर उस जल को उन्हें पिला दे, तो वे अवश्य स्वस्थ हो जाएंगे।

यह सुनते ही वहां उपस्थित सभी गोपियां गहरी दुविधा में पड़ गईं। वे सभी कृष्ण से अपार प्रेम करती थीं और उनकी भक्ति में पूरी तरह समर्पित थीं, लेकिन इस उपाय को अपनाने का साहस कोई नहीं जुटा पा रही थी। गोपियों के मन में एक भय था कि यदि किसी ने अपने पैरों का जल कृष्ण को पिला दिया और किसी कारणवश वे स्वस्थ न हुए, तो यह बहुत बड़ा अपराध माना जाएगा। ऐसी स्थिति में नर्क का दंड भी भोगना पड़ सकता था। वे कृष्ण के लिए चिंतित तो थीं, लेकिन संभावित परिणामों के विचार से उनके कदम ठिठक रहे थे। इसी बीच वहां राधा पहुंचीं। जैसे ही उन्होंने अपने प्रिय कृष्ण को उस अवस्था में देखा, उनका हृदय व्याकुल हो उठा। गोपियों ने उन्हें कृष्ण द्वारा बताया गया उपाय समझाया। राधा ने बिना एक पल गंवाए अपने पैरों को धोकर उसी जल से चरणामृत तैयार किया और उसे कृष्ण को पिलाने के लिए आगे बढ़ गईं। राधा को यह भली-भांति ज्ञात था कि वह क्या कर रही हैं। उनके मन में भी वही भय था, जो अन्य गोपियों के मन में था, लेकिन उनके लिए कृष्ण का जीवन और स्वास्थ्य सबसे अधिक महत्वपूर्ण था।

यदि उनके इस कार्य के कारण उन्हें नर्क भी जाना पड़े, तो भी वे इसके लिए तैयार थीं। उनके प्रेम और समर्पण के सामने अपने भविष्य की चिंता नगण्य थी। जैसे ही कृष्ण ने वह चरणामृत ग्रहण किया, उनकी अवस्था तुरंत सुधरने लगी और थोड़ी ही देर में वे पूर्णतः स्वस्थ हो गए। यह राधा के निष्काम प्रेम और अटूट निष्ठा की शक्ति थी, जिसने इस चमत्कार को संभव बना दिया। इस घटना ने यह सिद्ध कर दिया कि सच्चा प्रेम वही है, जिसमें प्रियजन की भलाई के लिए स्वयं के सुख-दुख की चिंता भी त्याग दी जाए।

बोधकथा

कालदेव और समय का वरदान

प्राचीन काल की बात है। हिमालय की तराई में एक छोटा-सा नगर था, जहां सत्यपाल नाम का एक साधारण किंतु परिश्रमी व्यक्ति रहता था। वह अत्यंत धर्मपरायण था, पर उसके मन में एक दुर्बलता थी। वह दूसरों की उन्नति देखकर भीतर-ही-भीतर ईर्ष्या से भर उठता था। यद्यपि वह किसी का प्रत्यक्ष अहित नहीं करता था, पर उसके विचार सदैव नकारात्मक रहते थे। एक दिन सत्यपाल वन मार्ग से गुजर रहा था। मार्ग में उसने एक वृद्ध ब्राह्मण को प्यास से व्याकुल देखा। बिना कुछ पूछे उसने अपने कमंडल से जल निकालकर उसे पिला दिया। जल पीते ही उस वृद्ध का स्वरूप दिव्य हो गया। वे स्वयं कालदेव थे- समय और कर्म के अधिष्ठाता देव। कालदेव बोले, "वत्स, तुम्हारे इस निः स्वार्थ कर्म से प्रसन्न होकर मैं तुम्हें एक अद्भुत वरदान देता हूं। तुम्हें एक घंटे का ऐसा समय दिया जाता है, जिसमें तुम जो भी काम करोगे, उसका फल तुरंत मिलेगा। पर ध्यान रहे- यह समय फिर कभी लौटकर नहीं आएगा।"

यह कहकर कालदेव अंतर्धान हो गए। सत्यपाल का मन उत्साह से भर उठा। उसने सोचा- अब तो मैं अपने भाग्य को बदल दूंगा। वह नगर लौटा और सबसे पहले अपने धनी पड़ोसी के घर गया। मन में आया कि यदि उसका धन नष्ट हो जाए, तो मेरा सम्मान बढ़ेगा। जैसे ही उसने यह विचार किया, पड़ोसी का धन हानि में बदल गया। यह देखकर सत्यपाल के मन में अजीब-सी तृप्ति हुई। फिर वह अपने प्रतिद्वंद्वी के पास गया और उसके पतन की कामना की। वह भी पूरी हो गई। एक के बाद एक, वह दूसरों के अहित की योजनाएं बनाता रहा और समय बीतता गया। उसे लगा जैसे शक्ति उसके हाथ में है और वही सब कुछ है। अचानक सूर्य अस्त होने लगा। सत्यपाल चौंका। उसे याद आया कि उसने

अपने लिए कुछ भी नहीं मांगा। वह दौड़ता हुआ अपने घर पहुंचा और मन ही मन दीर्घायु, सुख और शांति की कामना करने लगा। तभी आकाश में कालदेव की वाणी गूंजी- "वत्स, समय समाप्त हो चुका है। तुमने जो शक्ति पाई थी, उसका उपयोग दूसरों को गिराने में किया, जो मनुष्य समय को द्वेष में गंवाता है, समय उसे ही लील लेता है।" क्षणभर में सत्यपाल का शरीर दुर्बल हो गया। उसे अपनी भूल का बोध हुआ, पर अब बहुत देर हो चुकी थी। यह कथा सिखाती है कि ईश्वर द्वारा दिया गया समय और सामर्थ्य अमूल्य होता है, जो उसका उपयोग दूसरों के कल्याण में करता है, वही वास्तव में धन्य होता है। द्वेष और ईर्ष्या में किया गया प्रत्येक कर्म अंततः स्वयं के पतन का कारण बनता है।

महत्वपूर्ण त्योहार

शीतला अष्टमी

तिथि : 11 मार्च, बुधवार 2026

■ चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को शीतला अष्टमी के रूप में मनाया जाता है। कई स्थानों पर इस पर्व को बसोड़ा या बसोड़ा अष्टमी भी कहा जाता है। यह त्योहार विशेष रूप से उत्तर भारत के राज्यों जैसे गुजरात, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। मान्यता है कि यह पर्व रोग और संक्रमण से रक्षा की कामना के साथ मनाया जाता है। इस दिन परंपरा के अनुसार अंतिम बार बासी भोजन ग्रहण किया जाता है।

■ शीतला अष्टमी के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करें और पूजा की तैयारी करें। एक थाली में पुआ, दही, रोटी, बाजरा और सप्तमी के दिन गुड़ से बनाए गए मीठे चावल रख लें। दूसरी थाली में आटे से बना दीपक रखें और उसके साथ रोली, वस्त्र, अक्षत, हल्दी, मेहंदी और कुछ सिक्के रखें। दोनों थालियों के साथ ठंडे पानी से भरा एक लोटा भी रखें। इसके बाद माता शीतला की पूजा करें और उन्हें बारी-बारी सभी सामग्रियां अर्पित करें।

शक्ति उपासना का केंद्र शक्तिपीठ मां देवीपाटन मंदिर

उत्तर प्रदेश के बलरामपुर जनपद के तुलसीपुर तहसील के पाटन गांव में स्थित मां देवीपाटन मंदिर हिंदू धर्म के प्रसिद्ध 51 शक्तिपीठों में से एक है, जहां माता सती के शरीर का पवित्र भाग गिरा था और यही कारण है कि यह स्थल शक्ति का धाम, आस्था का केंद्र और तीर्थस्थल के रूप में अत्यंत प्रतिष्ठित है। शक्ति पीठों का पौराणिक चरित्र देवी भागवत पुराण, स्कंद पुराण, कलिका पुराण और शिव पुराण में वर्णित है।

देवीपाटन शक्तिपीठ के संदर्भ में माना जाता है कि यहीं पर माता सती का बायां स्कंध (कंधा) वस्त्र सहित गिरा था और इसी कारण से इसे शक्तिपीठ का स्थान प्राप्त हुआ। यहां माता को "पाटेश्वरी" के नाम से पूजा जाता है अर्थात वह देवी, जिसका संबंध उस पाट वस्त्र से स्थापित है। यह स्थल केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, अपितु सांस्कृतिक आस्था, शक्ति, भक्ति और दैवीय शक्ति का प्रतीक माना जाता है। मान्यता है कि देवी के गिरने वाले भाग के कारण यहां शक्ति की ऊर्जा सदियों से जीवित है। श्रद्धालु पवित्र सूर्यकुंड में स्नान कर मंदिर के भीतर स्नानादि अनुष्ठान के माध्यम से स्वयं को दिव्य शक्ति से जोड़ते हैं।

नमिता वैश्य
प्रधानाध्यापक

महारथी कर्ण ने यहां ली थी दिव्यास्त्रों का दीक्षा: एक लोक विश्वास के अनुसार द्वापर युग में यहां सूर्यपुत्र कर्ण ने सूर्यकुंड में स्नान करने के बाद परशुराम से दिव्यास्त्रों की दीक्षा प्राप्त की थी। इसी कारण से इस स्थान की महिमा और भी बढ़ जाती है। यहां पर शिव-दुर्गा की शक्ति की अनुभूति अलग-सी होती है। गर्भगृह से नीचे पाताल तक प्राचीन सुरंग की कथा कही जाती है और आज भी माना जाता है कि त्रेतायुग से जलती हुई अखंड ज्योति देवी की शक्तिमत्ता का प्रमाण है। देवीपाटन शक्ति पीठ ऐतिहासिक रूप से उत्तर भारत में शक्ति की उपासना का मुख्य केंद्र रहा है। इस पीठ की स्थापना नाथ संप्रदाय के आदिगुरु गोरखनाथ ने की थी। यहां के आसपास ऋषि-मुनियों के तप और साधना की कहानियां प्रचलित हैं, जिनमें गुरु गोरखनाथ और सिद्ध रत्ननाथ (नेपाल) जैसे संतों का नाम उल्लेखनीय है, जिन्हें यहीं सिद्धि प्राप्त हुई थी, जिससे इस स्थान की आध्यात्मिक महत्ता और भी स्पष्ट होती है।

भारत-नेपाल का सांस्कृतिक सेतु: यह शक्तिपीठ दो देशों भारत और नेपाल के सांस्कृतिक सेतु के रूप में भी प्रसिद्ध है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी इसे भारत-नेपाल के बीच एक सांस्कृतिक सेतु बताया है, जो देवी के सान्निध्य में सामाजिक एवं आध्यात्मिक जुड़ाव को मजबूती प्रदान करता है। देवीपाटन मंदिर को श्रद्धालु केवल पूजा-स्थल के रूप में नहीं देखते, अपितु यह एक ऐसा स्थान है, जहां देवी की कृपा से मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, ऐसी मान्यता प्रचलित है। भक्त मानते हैं कि मां पाटेश्वरी के दर्शन तथा पूजा से जीवन की इच्छाएं, स्वास्थ्य और सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है।

मुख्य आकर्षण: शक्ति पीठ के मुख्य आकर्षणों में सूर्यकुंड, अखंड धूनी (जहां निरंतर धूना जलाई जाती है) तथा गोपनीय पूजा-अर्चना शामिल हैं। चैत्र और शारदीय नवरात्र के समय

यहां विशेष रूप से भक्तों का भारी आस्था-ज्वार उमड़ता है। नवरात्रि पर करीब 15 दिनों तक राजकीय मेला लगता है, जिसमें देश के विभिन्न प्रांतों समेत नेपाल के श्रद्धालु आराधना के लिए आते हैं। मंदिर परिसर में नौ दुर्गा रूपों की प्रतिमाएं, विधि-विधान से पूजा-पाठ, दीप प्रज्ज्वलन, हवन-पूजन और लाल चुनरी, सिंदूर, फूलों सहित अनेक भेंट-वस्तुओं का समर्पण इस पूजा परंपरा को और भी समृद्ध बनाते हैं। मां की पूजा अलौकिक एवं अद्वितीय है। अर्द्धरात्रि के दूसरे पहर एक से चार बजे तक पूजा का समय निश्चित है, इसका समय कभी नहीं बदलता। समय के साथ इस मंदिर की महत्ता मात्र धार्मिक ही नहीं रह गई, अपितु यह देश का एक आध्यात्मिक पर्यटन का प्रमुख केंद्र भी बन गया है। मुख्यमंत्री का दूसरा घर कहे जाने वाले शक्तिपीठ देवीपाटन मंदिर को और भव्य बनाने के प्रयास प्रारंभ हो चुके हैं। अयोध्या धाम में आने वाले धार्मिक पर्यटक शक्तिपीठ देवीपाटन मंदिर की ओर उन्मुख हों, इसके लिए सरकार ने 42 करोड़ 50 लाख रुपये दिए हैं। बलरामपुर प्रशासन और उत्तर प्रदेश सरकार ने मंदिर के आसपास 50 एकड़ क्षेत्र का विकास करने की योजना बनाई है, जिससे यहां धार्मिक पर्यटन को और भी बढ़ावा मिले।

इस तरह जा सकते हैं मंदिर: मंदिर तक पहुंचने के लिए सबसे सरल रेल मार्ग सेवा है। लखनऊ तथा गोरखपुर ट्रेन के द्वारा आने पर तुलसीपुर रेलवे स्टेशन पर उतरना होगा। यहां से लगभग डेढ़ किलोमीटर मंदिर तक पहुंचने के लिए रिक्शा आदि की सुविधा है। बस से भी तुलसीपुर पहुंचा जा सकता है। लखनऊ से गोरखपुर की दूरी लगभग 300 किलोमीटर है।